क्रम संख्या :- 19 जुलाई - 2014

साक्षी

मसीह के सच्चे गवाहों के लिए एक पत्रिका

"तेरा सारा बचन सत्य ही है;
और तेरा एक-एक धर्ममय नियम
सदा काल तक अटल है।"

भजन 119:160

Please send news & articles to :-

Jeby K. Simon

Chief Editor (Sakshi)

'Santhwana'

Lohia Nagar, Katihar - 854105 (Bihar)

Mob. : 09470203962 / 08292941335

e-mail : jebyksimon@rediffmail.com

Associate Editors

Jennings K. Simon (Darbhanga)

Mob. : 09430520866

Samson D'cruz (Khagaria)

Mob. : 09431287603

Special Advisory Board

Samuel B. Thomas (Mathura, UP)

Mob. : 09410619725

Santhosh Thomas (Jamtara, Jharkhand)

Mob : 09431130895

P. Samson (Chakradharpur, Jharkhand)

Mob : 09934534152

Dear readers,

Sakshi is a faith ministry. If you are being led by the Lord, you are free to support this ministry with your valuable prayers and gifts. May God bless you.

(Chief Editor)

सम्पादक के कलम से

क्या आप परमेश्वर के लिए उपलब्ध हैं ?

मसीही सेवाओं के विषय में कहा जाए, विश्वासियों को दो भाग में बाँट सकते हैं। प्रथम विभाग, ये हैं जिसके पास बिल्कुल समय नहीं है। जब भी कलीसिया के अगुवें उन्हें किसी कलीसियायी सेवा में सहभागी होने हेतु बुलाते हैं, हमेशा यही जवाब उनसे सुनने को मिलेगा, ''मेरे पास समय नहीं है''। दूसरा विभाग कुछ ऐसे हैं जो हमेशा ''प्रभु के लिए कुछ करते हैं'', या करने के जैसा प्रदर्शित करते हैं। पवित्र शास्त्र का अध्ययन जब हम करते हैं, हम यह समझ जाएंगे कि परमेश्वर इन दोनों विभाग के लोगों को नहीं चाहते हैं। प्रथम विभाग इसलिए परमेश्वर के लए कुछ करना नहीं चाहते हैं क्योंकि उनको परमेश्वर से प्रेम ही नहीं है। दूसरा विभाग ऐसे हैं जो अपनी सामर्थ के बल पर परमेश्वर के लिए कुछ करना चाहते हैं। परंतु हमें यह याद रखनी है कि, परमेश्वर को यदि कुछ करना हो, उसके लिए मानुषिक सामर्थ की अनिवार्यता नहीं है। (अय्यूब 21:22, नीतिवचन 26:12) परमेश्वर की बड़ी-बड़ी योजनाओं को अगर हम स्पष्ट तरीके से देखते हैं, इस बात से हमें प्रकट हो जाती है कि वह हमेशा दुर्बल, सामर्थहीन एवं अयोग्य लोगों को अपनी योजनाओं के लिए उपयोग किया। (1कुरिन्थि 1:27-29) (1शमु० 16:7) मेरा कहना यह नहीं है कि अयोग्य लोग, सेवा में आने के बावजूद भी अयोग्य ही रह जाते हैं, परंतु यह है कि परमेश्वर अयोग्य लोगों को चुनते हैं और उन्हें अपनी सेवा करने हेतु योग्य बना देता है। उस प्रकार के लोगों की सूची जो बाईबल में दी है, लम्बी है। जब इस्राएल की राष्ट्र स्थापना को लक्ष्य रखते हुए परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया, तब वह पुत्रहीन एवं उनकी पत्नि बांझ थी। (उत्पत्ति 15:2,3) याकूब एक ठग था। (उत्पत्ति 27:12) मुसा एक क्षिप्र कोपि एवं भद्दा था। (निर्ग. 2:12;4:10) शमुएल सोथन का पुत्र था। (1 शमु. 1:2,20) शऊल एक चंचल तथा बिन्यामीन गोत्र के सबसे छोटे कुल में से भी था। (1 शमु. 9:21, 10:22) दाऊद अपने घर में सबसे महत्वहीन एवं चरवाहा था। (1 शमु. 16:11, 17:28), यिप्तह वेश्या का बेटा था। (न्यायि 11:1), यशायाह असभ्य भाषा का उपयोग करनेवाला था। (यशा: 6:5), आमोस एक चरवाहा एवं गूलर के वृक्षों का चाटनेवाला था। (आमोस 7:14)। प्रभु यीशु के शिष्यगण में ज़्यादातर लोग मछुए थे, बर्तिमाई एक अंधा भिखारी था।

(मत्ती० 4:18-22; मरकुस 10:46-52) प्रेरित पौलूस एक हत्यारा था। (प्रेरित० 8.1) यह सूचि बहूत लम्बी है। परंतु परमेश्वर ने इन आयोग्यों को बुलाकर योग्य बनाया और अपनी सेवा के लिए इस्तेमाल किया।

तो फिर से मैं यह कहना चाहता हूँ, कि परमेश्वर को अपनी सेवा निभाने हेतु किसी भी मनुष्य की सामर्थ या प्रतिभा की जरूरत नहीं है। फिर परमेश्वर हमसे क्या चाहते हैं ? यशायाह भविष्यद्धक्ता जब अपनी अयोग्यता के विषय में परमेश्वर से कहा, परमेश्वर उनको पवित्र कराने के पश्चात उनके सामने एक प्रश्न रखा, (यशावाह 6:5,6) "मैं किसको भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा ?" (6:8) (Whom Shall I send, and who will go for Us ?) वास्तव में परमेश्वर अपनी सेवा के लिए यहाँ यशायाह को बुला रहा है, न कि यशायाह स्वयं सेवा करने हेतु निकल रहा है! जब परमेश्वर की बुलाहट को यशायाह ने सुनी, वह उस सेवा हेतु अपने आपको उपलब्ध कराया। (6:8) वह परमेश्वर से कहता है, "मैं यहाँ हूँ, मुझे भेज"।

आज बहुत से एसे विश्वासि हैं जो परमेश्वर के लिए कुछ करते हें या करना चाहते हैं, परंतु कितने ऐसे हैं, जो उस सेवा के लिए अपने आपको उपलब्ध कराते हैं, जिस सेवा परमेश्वर उनसे कराना चाहते हैं ?

याद रखिए, परमेश्वर हमारी उपलब्धता चाहता है, न कि योग्यता ! (God wants our availability, not our eligibility) तो क्या आप परमेश्वर के लिए उपलब्ध हैं ? (Are you available for God ?) अगर आप तैयार हैं तो परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए, हे परमेश्वर मुझे आप उपयोग कीजिए उस सेवा के लिए जो आप मुझसे कराना चाहते हैं। मैं अपने आपको तुझे सौंपता हूँ। प्रभु आपकी मदद करे !

(जेबी के. साईमण)

"प्रार्थना बिना एक विश्वासी के रूप में रहना
प्राण-वायू बिना जीवित रहने से भी मुश्किल है"।
-मार्टिन लूथर किंग जूनियर

पवित्र आत्मा की सेवकाई (1)

बबलु शाह, आसनसोल (प.बंगाल)

यहेजकेल 47:1-12 तक के पदों में पवित्र आत्मा की आपूर्ति, मात्रा और सेवकाई का एक सुन्दर चित्र दिया हुआ है। यह भाग का अध्ययन करने के पूर्व इस शास्त्रांश को एक-दो बार पढ़ लेना आवश्यक है। फिर प्रार्थना करनी होगी, इसलिए कि, पवित्र आत्मा इसका अर्थ हमें समझा दें। क्योंकि जिस पवित्र आत्मा ने परमेश्वर का वचन लिपिवद्ध किया, वही परमेश्वर ने उस आत्मा को, प्रभु यीशु के जरिये, पूर्ण महिमा के साथ हमें प्रदान किया है; जो शास्त्र की रहस्य अपने अनुयायियों के पास व्यक्त करते हैं। अगर हम चाहते हैं तो, वो अवश्य सारी सच्चाई हमारे सामने प्रकट करेंगे।

तीन प्रमुख भविष्य द्धक्ता ने अपनी रचनाओं में परमेश्वर के तीन व्यक्तित्वों का चित्रण किया है। यशायाह परमेश्वर के पुत्र का ज़िक्र किया है (अर्थात यीशु का जन्म-मृत्यु व पुनःरुत्थान, मिलेनियम तथा सहस्र साल शासन का एकच्छत्र सम्राट इत्यादी) निर्मयाह ने उस पिता परमेश्वर की कथा लिखी है, जो इस्राएलियों को वे, उनकी संतान होने के कारण दण्ड दान दिये। परंतु यहेजकेल ने पवित्र आत्मा को उन प्रतीकात्मक वस्तुएँ जैसे घूमनेवाले पहियों, हवा की आवाज़, सुखी हड्डियाँ, हवा का प्रवाह इत्यादी के माध्यम से प्रस्तुत की। परमेश्वर का काम करने हेतु या कोई परमेश्वर का काम करना चाहता हो, पवित्र आत्मा की मदद से ही उसे सेवा निभानी होगी। उपरोक्त शास्त्रांश के माध्यम से नबी यहेजकेल इन सच्चाईयों को दर्शायें हैं। **पानी का प्रवाह**-पानी परमेश्वर का भवन के डेवढ़ी के नीचे से निकल रहा था। (डेवढ़ी-राजमहल का सिंहफाटक के बगल में सिपाहियों की रखवाली करने का स्थान) ऐसे जगह से पानी निकल आना एक अलौकिक सी बात है। यह कौन घटना की ओर इशारा करती है ? स्पष्ट रीति से यह उस घटना की ओर इशारा करती है जो पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हुई। नदी परमेश्वर के आशिषों को प्रकाशित करती है। अदन की वाटिका में सिंचाई हेतु जो नदी बहती थी, उसकी धारा न केवल उद्यान में सीमित रहती थी, परंतु चारों दिशाओं में होती थी। यह पूरे संसार में परमेश्वर के आशिष की विस्तृती की ओर इशारा करते हैं। प्र० वाक्य 22 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि यह नदी परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकलती है। हम में से कितने ऐसे हैं जो चाहते हैं कि इस नदी की प्रवाह हमारे ऊपर से भी हो ? हम तब ही ऐसी चाहत कर पायेंगे, जब परमेश्वर का आशीर्वाद का सही तात्पर्य हम में उपलब्ध हो!

पानी की आपूर्ति : पुनःरूत्थान के पश्चात प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा था कि वे अवश्य मरुशलेम में ही प्रतीक्षा करें और प्रार्थना करते रहे। मसीह के पुनःरुत्थान के पच्चास दिनों के बाद पवित्र आत्मा पृथ्वी पर उतर आये। जब प्रभु यीशु स्वर्ग में महिमा प्रप्त की, तब

पिता परमेश्वर ने पवित्र आत्मा को इस संसार में भेज दिया। उस दिन कलीसिया की बप्तिस्मा हुई। प्रभु का स्वर्गारोहण एवं महिमा प्राप्त करने का यह मतलब है कि परमेश्वर ने उन्हें महाराजा के रूप में अभिषेक किया। पवित्र शास्त्र में मसीह यीशु का तीन अभिषेक के बारे में उल्लेख की गयी है।

(क) मार्था के गृह में, जहाँ प्रभु के दो चरण अभिषिक्त हुए। यहाँ प्रभु का अभिषेक भविष्यवद्धक्ता के रूप में हुआ। (यूहन्ना 12:3)

(ख) प्राक्तन कोढ़ी शमौन के गृह में, जहाँ प्रभु का सिर पर अभिषेक किया। यहाँ उन्हें याजक (पुरोहित) के रूप में अभिषेक कर दिया गया। (मरकुस 14:3)

(ग) स्वर्ग में पिता का भवन में, परमेश्वर के द्वारा वह राजा के रूप में अभिषिक्त हुए। पिता की इच्छा पूर्ण रूप में पालन करने के कारण यह अभिषेक सम्पन्न हुआ। (भजन 45:7, फिलिप्पि. 2:9,10) किन्तु उनका अभिषेक स्वर्ग में ही रुका न रहा; परंतु पृथ्वी पर भी उतर आया। ''यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्र की ओर तक पहूँच गया''। (भजन 133:2) प्रभु यीशु कलीसिया का सिर व कलीसिया उनकी देह है। अभिषेक का यह तेल उनके मस्तक पर ही रूक न गया, किन्तु पूरे शरीर में चू पड़ा। एक ही साथ सर स्वर्ग में, और शरीर पृथ्वी पर अभिषिक्त हुए। (1कुरिन्थि 12:13)

स्वर्ग के उस धर्मधाम से उस नदी की धारा (पवित्र आत्मा) पृथ्वी में उमड़ कर गिर रही है। (यूहन्ना 7:38,39) और विश्वास के द्वारा प्रत्येक विश्वासी उस अभिषेक की प्राप्ती करता है। (यूहन्ना 2:27) पवित्र आत्मा की सामर्थ जब उतर आती है, तो बहूतायत से ही आती है। धीरे से वह वृद्धि परिलक्षित होती है, जैसे कि उपरोक्त शास्त्रांश में उल्लेख की गयी है।

पानी की अलौकिक महिमा : भविष्यद्धक्ता के अनुसार जहाँ-जहाँ पानी प्रवाहित हुआ, जीवन की उत्पत्ति भी हुई। इसके प्रभाव से जंगल के सारे पेड़-पौधे, हरेक प्रकार के जीव-जन्तु तथा पानी के मछलियाँ इत्यादी सज्जीवित हुए। यह भविष्यवाणी भविष्यकाल में संपन्न होने की है। अर्थात वर्तमान कालीन कलीसियायी युग में प्रारंभ होकर अगामी सहस्र-वर्ष के राज्य (मिलेनियम) में संपूर्णता प्राप्त करेगी।

सुसमाचार : जैसे यहाँ पानी का प्रवाह का वर्णन किया गया है वैसा ही पिन्तेकुस्त के बाद पवित्र आत्मा की शक्ती से सुसमाचार का भी प्रचार-प्रसार होने लगा; और हो भी रहा है। और जहाँ कहीं भी यह प्रचार किया गया, सर्वत्र प्राण शक्ति परिलक्षित हुई। पवित्र आत्मा की सृजनशील तथा पुन:सृष्टि करने की क्षमता के कारण ही यह संभव है। इसी का परिणाम स्वरूप मैं और आप उद्धार पाये हैं। कहने का तातपर्य यह भी है कि, हम यह जाने कि परमेश्वर हमें अपनी महिमा हेतु उपयोग कर रहे हैं ताकि हम उस प्राणशक्ति का समाचार सब मनुष्यों के पास ले जाएँ। ..... (जारी रहेगा)

दाख की बारी से

जामताड़ा की सेवकाई– आत्म समर्पण का 144 वाँ वर्ष

बिहार एवं बंगाल ऐसे दो भारतीय राज्य हैं जिनके पास ''ब्रदरण'' कसीसियाओं के लगभग 144 वर्षों का इतिहास की वसीयत है। यहाँ तक केरल के भी 'ब्रदरण' इतिहास मात्र 115 वर्षों का है। 18वीं सदी के अंतिम तथा 19वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में कई 'ब्रदरण' प्रचारकगण बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में सेवकाई प्रारंभ किये थे। एंटनी नोरिस ग्रोस (जो आंध्रप्रदेश में सेवा शुरू किया) के कुछ सहकर्मिगण बिहार के पटना, गया एवं आरा इत्यादी क्षेत्रों में सेवा की थी। ई० 1899 एवं ई० 1910 के बीच में कुछ अन्य सेवकगण बिहार के बांका जिले के साक्टोरिया, कटोरिया इत्यादी जगहों में भी शुभ संदेश का प्रचार किया करते

सन् 1868 में निर्मित जामताड़ा के प्रथम कलीसिया भवन के सामने विश्वासीगण

थे। परंतु उत्तर बिहार (वर्तमानकालीन बिहार) की सेवकाई कठिनाईयों से भरी थी। कई सेवकगण स्थानीय लोगों के हाथों से मारे गये, कई लोगों को भगा दिये गये; यहाँ तक कि स्थानीय विश्वासिगण भी इन सतावटों के सामने आत्म समर्पण के साथ खड़े नहीं रह पायें।

परंतु इसी काल में ही, बिहार के दक्षिण क्षेत्रों में (वर्तमान में झारखंड) जहाँ आदिवासी मूल के लोग ज़्यादा तादाद में रहते थे, सेवकाई यद्यपि त्यागपूर्ण तो थी, सफल रही। सन् 1870 ई० में एक अंग्रेजी प्रचारक श्री विलयम् एस० बॉडी, जो सरकारी नौकरी से सन्यास लिये हुए थे, अपनी पत्नी एलन, के साथ बिहार के जामताड़ा (अभी झारखंड में) पहूँचे, जहाँ उनलोगों ने एक ग्रामीण विद्यालय की स्थापना की। परंतु सन् 1872 में बॉडी प्रभु में सो गये। इस दर्मियान परमेश्वर ने स्वीडन से कलकत्ता की ओर आनेवाली एक समुद्री जहाज़ का

कर्मचारी एड्वेर्ड कोर्नेलियस को परिवर्तित किया, जो सहयात्रियों से सुसमाचार कहने में उत्साहित थे। जैसे ही जहाज़ कलकत्ता पहूँची, कोर्नेलियस ने अधिकारियों से छुट्टी की माँग की, जो उन्हें ज़ल्द ही प्राप्त हुई। उन्होने अपने सामानों को लेकर कलकत्ता से पैदल चलने लगा। चलते–चलते वह जामताड़ा से 25 मील पीछे का एक जगह पहूँचा जहाँ उन्होने एक

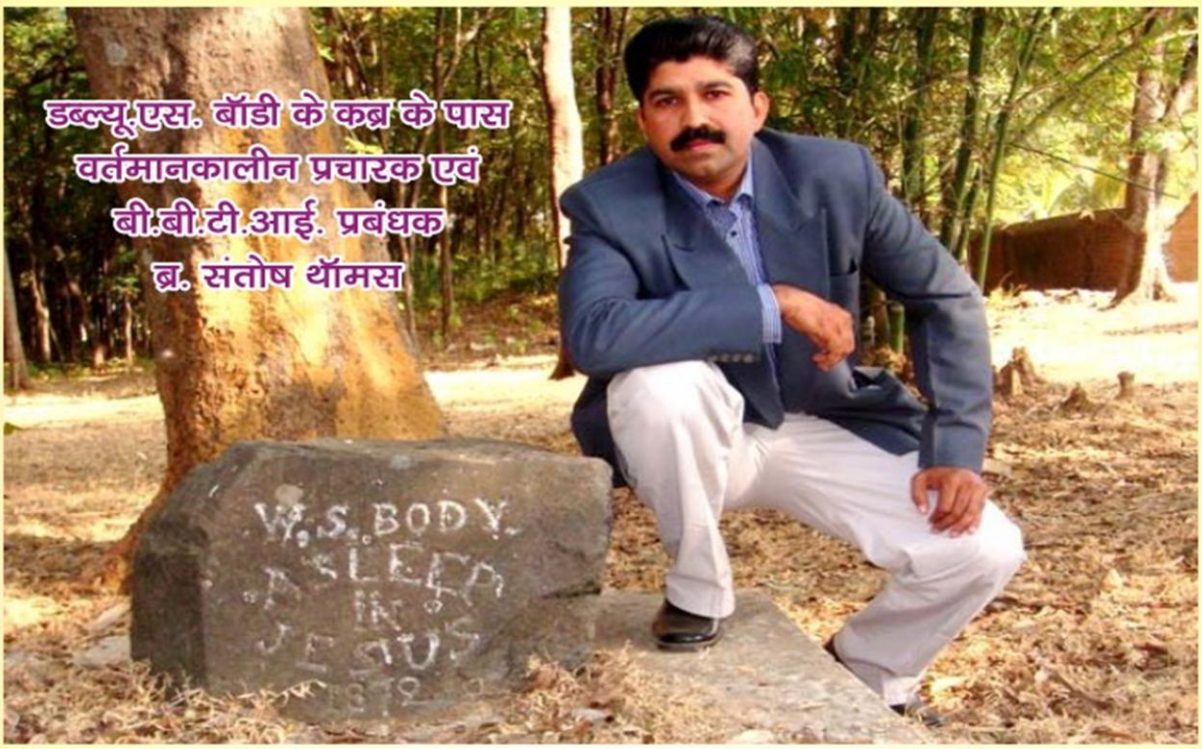

झोपड़ी बनाई। वहाँ रहते हुए वह स्थानीय भाषा सीखने एवं स्थल वासियों से रिश्ता जोड़ने में सफल हुए। उनका अधिकत्तर जीवन, गौशाला, झोपड़ी इत्यादीयों में था। सन् 1872 में डब्लयू० एस० बॉडी की मृत्यु के पश्चात उनकी विधवा एलन कलकत्ता से इंगलेंड जाने की तैयारी में थी। कोर्नेलियस ने एलन के साथ शादी का प्रस्ताव रखा। शादी के पश्चात दोनों जामताड़ा वापस आये और वहाँ की सेवकाई को आगे बढ़ाये। लगभग एक अर्ध शताब्दी तक दोनों मिलकर जामताड़ा में शुभ संदेश की बीज बोते रहे। सन् 1909 में एलन, जो प्रभु में विश्वास योग्य थी, अपना प्रभु के घर जिसकी वह प्रतीक्षा करती थी चली गई। सन् 1916 में एड्वेर्ड कार्नेलियस भी, जो एक विश्वासयोग्य सेवक था, अपनी सेवा से निवृत होकर अंनत विश्राम में प्रवेश किया। सन् 1899 से लेकर सन् 1910 के बीच में अनेकों प्रचारकगण बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभु यीशु का प्रेम स्थानीय लोगों के साथ बाँटने हेतु आये। बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत मिशन स्टेशनों से पूरे उत्तर भारत में सेवा का कार्य जारी था। विभिन्न उत्तर भारतीय राज्यों से अनाथों एवं अशरणों को बिहार के मिशन स्टेशनों में लाया करते थे जहाँ उन्हें पर्याप्त सेवा उपलब्ध किये जाते थे। उन दिनों में जामताड़ा इन सेवा कार्यों का एक केन्द्र स्थान था। ..... (जारी रहेगा)

'ऊर्जा का जादू'

जैम्स वर्गीस (I.A.S.) त्रिवेन्द्रम
वर्गीस चाको (M.B.A.) मुम्बई

थर्मो डायनामिक सिद्धान्त के अनुसार प्रकृति की प्रत्येक वस्तु नाश की ओर बढ़ रही है। कोई भी बस्तु नई नहीं होती जाती है। बुजुर्ग लोग इस प्रकार कहते हुए बराबर हम सुनते हैं, ''मेरे बचपन में ये इससे भी अच्छे थे''। अर्थात परिणाम ''सिद्धान्त'' का दावा जो कहता है कि ''पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु प्रगति की पथ पर है और उसमें नियमित तौरपर परिणाम होती है'', बिल्कुल असत्य है। परंतु ध्यान दीजिए, पवित्र शास्त्र इस संबंध में क्या कहती है,

''आदि में तू ने पृथ्वी की नींव डाली,
और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है।
वह तो नष्ट होगा, परंतु तू बना रहेगा;
और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा।
तू उसको वस्त्र के समान बदलेगा, और वह बदल जाएगा। (भजन: 102:25-27)

मनुष्य भी एक ऐसा प्राणी है, जिसका जितना दिन गुजर जाता है, उतना वह पुराना होता जाता है। हम जिस धरती पर वास करते हैं, ये धरती एवं अंतरीक्ष सब कुछ सड़ रहे हैं। क्या इस सच्चाई से हम अपने चेहरे को फेर सकते हैं ? ''हम विज्ञान की दुनियाँ में प्रगति पा रहे हैं'' ऐसे कहने का तात्पर्य यह है कि हम नई-नई बातों के विषय में जानकार हो रहे हैं; यह नहीं है कि पृथ्वी नई होती जा रही है। प्रत्येक प्राप्ती जैसे थर्मी डायनामिक सिद्धान्त की खोज, जब की जाती है, हम एक सच्चाई से अवगत होते हैं - संसार नाश होने जा रहा है।

नया पिंड (Mass) का निर्माण नहीं होता है। इस सिद्धान्त को Law of Mass Action कहते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार दो पिंडो का मिश्रण से उत्पन्न होनेवाली नई वस्तु में उन दोनों पिंडों की मात्रा तुल्य होगा। अर्थात इस मिश्रण के द्वारा नई किसी वस्तु की उत्पत्ति हुई ही नहीं, परंतु जो पिंड (Mass) पहले से है उन दोनों का केवल मिलावट हुआ है। उदाहरण स्वरूप कहा जाय हाईड्रोजन एवं आक्सिजन का मिश्रण करते हुए कोई प्रयोग करने पर जिस नई वस्तु का निर्माण होता है, उस वस्तु का पिंड, उसका निर्माण हेतु उपयोग किये गये हाइड्रोजन एवं ऑक्सिजन का पिंड के तुल्य होंगे, अर्थात, संसार में नई सृष्टि के रूप में दर्शाने' के लिए कुछ भी नहीं है! सभोपदेशक की पद पुन: याद आ रही है। ''क्या ऐसी कोई बात है जिसके विषय में लोग कह सके कि देख यह नई है ? यह तो प्राचीन युगों में वर्तमान में थी।'' (सभो. 1:10)

पवित्र शास्त्र बाईबल में प्रगट किये गये वैज्ञानिक सच्चाईयों की त्रुटिहीनता एवं यथार्थता को मानुषीक शब्दों से समझाना असंभव है।

चलाकी का परिणाम

हम कभी-कभी अपने आपको बहूत ज़्यादा बुद्धिमान समझने लगते हैं। लेकिन ये सोच हम पर बड़ी परेशानियाँ ला सकती है। कभी-कभी जब हमारे माँ-बाप हमसे पढ़ने के लिए कहते हैं, उन्हें धोखा देने के इरादा से हम दिखावा कर बैठ जाते हैं। इसका परिणाम हमें तब भुगतने पड़ते हैं, जब हमें परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त नहीं होते हैं। हमें सब के सामने लज्जित भी होने पड़ते हैं।

किसी घर में एक गधा था, जिसका मालिक उसे बाज़ार से सामान लाने हेतु इस्तेमाल करता था। परंतु गधा आलसी होने के कारण, काम करना नहीं चाहता था। एक दिन की बात है, उसका मालिक गधे के ऊपर नमक लादकर घर ले आ रहे थे। रास्ते में एक नाला था जिसमें पानी कम था। अचानक पैर फिसलने के कारण गधा नमक के बोरे सहित नाले में गिर गया। परंतु पानी में भींगकर नमक गलने के कारण, बोरा हल्का हो गया। भार कम होने के कारण गधा बहुत खुश होकर घर चला गया। कुछ दिन के पश्चात मालिक ने उस पर चीनी का बोरा लादकर, बाज़ार से घर ले आ रहे थे। जब वे दोनों वही नाले के पास पहुँचे, जहाँ गधा गिरा था, उसे उस घटना की याद आई, और वह जान बूझकर नाले में गिर गये। इसबार भी पिछले दिन के जैसे सारे के सारे चीनी गलकर बह गये और बोझ हलका हो जाने की खुशी से गधा घर चला आया। जब प्रत्येक दिन गधा इस प्रकार करने लगे, मालिक ने यह बात समझ ली कि गधा जान-बूझकर ऐसा कर रहा है। और उसने भी अपने मन में ठान लिया कि गधा को एक सबक सिखानी है। अगले दिन उसे बाज़ार ले गया और उस पर रूई लाद दी। हमेशा की तरह इस बार भी बोझ हल्का करने के लिए गधा पानी में गिर गया। परंतु रूई भींगने के कारण, उसपर बोझ बढ़ गया। और उसदिन उसे घर पहूँचने में ज़्यादा परेशानी उठानी पड़ी।

प्यारे बच्चों, इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि, हम कभी भी अपने आपको दूसरों से अधिक बुद्धिमान नहीं समझना चाहिए। और अपनी बुद्धि को कभी भी दूसरों को ठगने हेतु उपयोग नहीं करना चाहिए। बाईबल कहती है, ''अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना, क्योंकि उससे अधिक आशा मूर्ख ही से है''। (नीति वचन 3:7, 26:12) ✹

(सैम अंकल)

दुनियाँ के चारों ओर से

- अंतराष्ट्रीय पेपसी कंपनी के सी०ई०ओ० श्रीमती इंदिरा नूई के अनुसार अपने बच्चों की सेवा की मामले में वह एक पराजय है। इस विषय में उन्हें गहरा अपराध बोध भी है। उनका मानना है कि अपनी लड़कियों के साथ उनकी बढ़ती उम्र के समय वह पर्याप्त समय नहीं दे पायी है।
- विश्व स्वास्थ संगठन के अनुसार भारत दुनियाँ के सर्वाधिक क्षयरोगियों का देश है। लगभग 40 प्रतिशत भारतीय नागरिक क्षयरोग (T.B.) से प्रभावित हैं। प्रति 3 मिनट, एक भारतीय नागरिक क्षयरोग के कारण मर जाते हैं।
- गृहयुद्ध से लहूलुहान इराक में मसीहीयों की स्थिति दयनीय बन चुकी है। केवल मोसुल शहर में ही अनेकों मसीही के घरों पर उग्रवादियों के द्वारा हमला की गई। लगभग सभी मसीही अराधनालयों को तहश-नहश कर दिये गये। बहूत सारे मसीहीगण अपनी जन्म भूमी को छोड़कर पलायन कर रहे हैं।
- उत्तर प्रदेश के सेहकारी ग्राम में बजरंग दल के कार्यकर्त्ता के द्वारा एक चर्च पर हमला की गयी। चर्च के पास्टर आर.सी. पॉल के द्वारा शिकायत करने पर पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार किया, जिसमें बजरंग दल के स्थानीय समन्वयकर्ता हेमन्त सिंह भी शामिल हैं।
- भारत में एचआईवी से संक्रमित लोगों का दुनियाँ में तीसरा सबसे बड़ा घर है। इस खतरनाक वायरस से 21 लाख भारतीय पीड़ित हैं। संयुक्त राष्ट्र के एचआईवी/एड्स पर यूएन एड्स प्रोग्राम द्वारा जारी की गई एक रिपोर्ट में यह बात सामने आई है। रिपोर्ट के अनुसार दुनियाँ भर में पीड़ित 3.5 करोड़ लोगों में 1.9 करोड़ को पता ही नहीं है कि वे एचआईवी से संक्रमित हैं।
- दुनियाँ के अत्यंत दरिद्र लोगों में एक तिहाई भारत में रहते हैं। पाँच वर्षीय या उस से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु की संख्या में भी भारत शीर्ष पर है। केन्द्रीय मंत्री श्रीमती नजमा हेप्तुल्लाह द्वारा विमोचित की गई यू.एन. मिलेनियम डेवलपमेंट गॉलस की एक रिपोर्ट में इन सारी बातों को बताई गई है।

पाठकों की प्रतिक्रिया

- पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद! ''पगड़ी खोलकर सद्गुरू की सेवा में'' शीर्षक बहूत ही अच्छा लगा। (रेजी जॉर्ज, मस्कट, ओमान)
- 'साक्षी' मिली। सऊदी अरब की बहन का चित्र सतावट सहने वाले मसीही भाई-बहनों के लिए प्रार्थना करने की प्रेरणा की। (उपेन्द्र यादव, पकड़ीदयाल, बिहार)
- 'साक्षी' मिलती है। प्रभु का वचन पढ़ने से मेरी आत्मीक आँखे खुल गई। (शिव पूजन सिंह, मिर्जापुर, यू.पी.)
- मेरी कलीसिया के सदस्यगण बड़े उत्साह के साथ साक्षी पढ़ते हैं, हमें अधिक कॉपी की अनिवार्यता है। (Evg. जी. तिमोथी, गाँधी धाम, गुजरात)

बाईबल प्रश्नोत्तरी

बाईबल प्रश्नोत्तरी– 19

जेन्निंगस के सैमण (दरभंगा)

(सभी प्रश्न न्यायियों से है)

1. मोआब के राजा.....(1,7,13)
2. जब.....मर गया तब इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया। (1,2,3)
3. .....का नाम पूर्वकाल में किर्यत्सेपेर था। (3,9,15)
4. कांलेब की बेटी.....(4,5,6)
5. .....का पुत्र शमगर (4,10,16)
6. यहोवा की और.....की तलवार (8,14,20)
7. लप्पीदोत की पत्नी ..... (19,25,31)
8. इसने सत्तर भाईयों को घात किया .....(32,33,34,35,36)
9. यहोवा.....को एक स्त्री के अधीन कर देगा। (26,27,28)
10. एबेद का पुत्र .....(21,22)
11. तोला को .....में मिट्टी दी गई (11,17,23)
12. .....का शाप अबीमेलेक पर धर गया (12,18,24)
13. उस.....के दमाद शिमशोन (29,30)

बाईबल प्रश्नोत्तरी 18 के विजेता

रेजी जॉर्ज, मस्कट (ओमान)

1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30
31	32	33	34	35	36

एक सफेद कागज़ पर, जैसे दिखाये गये हैं वैसे हीं कॉलम बना दें, सही उत्तर दिये गये अंकों के अनुसार कॉलम में भर दें।
उत्तर मुख्य संपादक के पते पर या
jebyksimon@rediffmail.com
में स्केन करके भेज सकते हैं।

विजयी को पुरस्कृत किए जाएँगे।

JHANJRA BRETHREN ASSEMBLY

Ordinary Mail :
Post Box : 161, Asansol-713301
West Bengal, INDIA
Email : achintoghosh@yahoo.com

Registered Article :
"SAVERI" Flat No. - 1B, Shristinagar, P.O. : R.K. Mission
New Asansol-713305 (West Bengal) INDIA
Mobile : +91 9434226709

Dear saints in Christ,

Warm greetings in the highly exalted name of Jesus Christ. With grateful hearts we want to thank you for your continued prayers and support for the ongoing work in our Assembly.

As a recap, the Assembly was conceived after the Peace Outreach Team (consisting of evangelists from West Bengal and few BBTI students) conducted a campaign. It is our joy that several persons who received the gospel packets showed interest. Thereafter I regularly followed through over a period of several months, and then few Hindu people committed their lives to our living Lord. The first Worship commenced on October 10, 2010 after a baptism ceremony. All 50 members were formally Hindus, and ethnically from Bihar, Nepal, Bhojpur, West Bengal and Santhal tribe. Hindi is the main language used among us.

Jhanjra is located 50 kilometers from Asansol in the coal mining belt with very poor access roads. Most believers are factory workers with low salary structure. Presently, we are gathering for worship in a room which is made beneath the staircase of a believer's labour quarter. The floor space is enough for 20 persons to be seated, while rest 30 members stand throughout the worship time. This resulted in our need for a worship hall.

The estimated cost works out to Rs. 12.0 lacs (rupees eight lacs only) with a well for water supply. Our members prayerfully began a building fund, its present balance being Rs. 2,50,000/- (Rs. Two Lakh Fifty thousand only).

Since we face a significant shortfall, this letter is a request for your timely help. You can be well assured that your donation will achieve a great value of changed lives for eternity in a terrain that is unreached with the good news.

We are giving below our bank details if the Holy Spirit leads you to help us monetarily.

Indian Overseas Bank (A/c # 070801000011948, IFSC code IOBA0000708) Asansol Branch (WB) in favour of Bro. Santa Bahadur and Achintya Ghosh. All communication may be made to Achintya Ghosh, 'Saveri', Flat No. 1-B, Shristi Nagar, Post- R.K. Mission, Asansol-713305, West Bengal, INDIA.

With thanks and prayers,

For Jhanjra Brethren Assembly.

Achintya Ghosh
(Evangelist)

Bro. Santa Bahadur
(Elder)

We praise God that the work at Jhanjra is increasing daily as Evg. Achintya Ghosh is laboring for the Lord in that place. Their need is genuine and deserves your prayerful support. Please, pray for the growth of Assembly and render your financial support. With prayers,

Bro. Samuel Kurien
(Evangelist)

Bro. Santhosh Thomas
(Evangelist)

"फिर अखाड़े में लड़नेवाला यदि विधि के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं पाता।"
(2 तिमुथि 2:5)

If not delivered kindly return to :-
Jeby K. Simon
Chief Editor, Sakshi
Santhwana
Lohiya Nagar, Katihar - 854 105 (Bihar)

साक्षी

मसीह के सच्चे गवाहों के लिए एक पत्रिका

To,

Printed and published by SAKSHI Team at Ganpati Offset Press, Katihar